श्री अबु आझमी (मानखुर्द-शिवाजीनगर): अध्यक्ष महोदय, मुझे खुशी है कि आज आपने मुझे डॉ.बाबासाहब आंबेडकर जी के विषय में बोलने के लिए समय दिया.

वे डॉ.बाबासाहब आंबेडकर, जिन्होंने मुझ जैसे दबे कुचले को यह हक दिया कि मैं देश के सब से बड़े मालिक या दुनिया के सब से बड़े इन्सान के खिलाफ माईक के सामने खड़े होकर बोल सकता हूं. वे डॉ.बाबासाहब आंबेडकर, जिन्होंने समाज के दबे कुचले लोगों के लिए लड़ाई लड़ी, उस डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के स्मारक के लिए हम लोगों को बार बार प्रेशराईज करना पड़ता है, बार बार उसके लिए आंदोलन करना पड़ता है. इस बात का मुझे अफसोस है. महिनों से यह मामला कई चल रहा है. मैं सरकार से निवेदन करुंगा कि सरकार इस बारे में तुरंत और अभी के अभी यह प्रस्ताव पारित करे. मुझे खुशी है कि सदन के सभी सम्माननीय सदस्य इस बारे में एकसाथ खड़े है. यह प्रस्ताव पारित होना चाहिए और इंदू मिल की जगह पर स्मारक बनाया जाना चाहिए. मुझे इस बात की खुशी है कि डॉ.बाबासाहब आंबेडकर को मुस्लिम लीग ने वेस्ट बंगाल से सीट देकर उनको हाऊस में भेजा था. मैं उसी समाज का हूं. मेरे जैसे दबे, कुचले को डॉ.बाबासाहब आंबेडकर ने समाज में बराबरी का हक दिलाने के लिए जो कोशिश की उसको हम कभी भूल नहीं सकते. उन्होंने सामाजिक न्याय की कल्पना दी थी. आज पूरे देश के अंदर लोग डॉ.बाबासाहब आंबेडकर जी की जयजयकार कर रहे है.

अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि आज इस प्रस्ताव को पारित किया जाय. यह वही समाज है जिसके लिए डॉ.बाबासाहब आंबेडकर जी ने बड़ी तगड़ी लड़ाई लड़ी. उन्होंने समाज के दबे, कुचले, अल्पसंख्यक के लिए के लड़ाई लड़ी. इसी तरह जब कभी अल्पसंख्यक का मामला हो तो पूरा सदन दबे कुचले लोगों को लिए एकसाथ आकर उनको समर्थन देंगे ऐसी मैं यह उम्मीद रखता हूं. मुझे उम्मीद है कि सरकार इस प्रस्ताव को पारित करके, केवल महाराष्ट्र के ही नहीं तो भारतवर्ष के करोड़ों लोगों के दिलों में एक खुशी पैदा करेगी ऐसी मुझे आशा है. इतना कह कर मैं अपना भाषण पूरा करता हूं. धन्यवाद.